13 / 06 / 82 की अव्यक्त वाणी

पर आधारित योग अनुभूति

श्रेष्ठ सेवा धारी आत्मा की अनुभूति

➢➢ आत्म अभिमानी स्थिति

➳ _ ➳ मैं आत्मा हूं

➳ _ ➳ भृकुटी के मध्य मेरा निवास स्थान है

➳ _ ➳ 5000 वर्ष इस सृष्टि पर मैंने पार्ट बजाया है

→ 84 जन्मों का चक्र पूरा किया है

→ मैं हीरो पार्टधारी आत्मा हूं

→ 84 जन्म 84 भिन्न-भिन्न चोले धारण कर

→ मुझ आत्मा ने अपना पार्ट बजाया है

■ इस अंतिम जन्म मैं आत्मा अपने स्वधर्म में स्थित होती हूं

■ खोया हुआ अपना स्वराज्य पाती हूं

■ पांच तत्वों से बने इस देह में विराजमान मैं श्रेष्ठ आत्मा हूं

■ मन बुद्धि की मालिक हूं

➳ _ ➳ हर कर्म श्रीमत प्रमाण करने वाली कल्याणकारी आत्मा हूं

→ सृष्टि परिवर्तन के कार्य में निमित सेवा धारी हूं

■ इस देह से न्यारी प्यारी हूं

➢➢ आत्मिक दृष्टि का अभ्यास

➳ _ ➳ मैं आत्मा मधुबन में हूं

➳ _ ➳ स्वयं को मधुबन के प्रांगण में देखती हूं

→ भिन्न-भिन्न नामरूप वाली आत्माएं चारों और हैं

→ सर्व आत्माएं उस एक की लगन में मग्न हैं

→ एक बाबा सर्व के मन में मुख में है

→ सर्व आत्माओं को परमात्मा ने ब्राह्मण परिवार की स्नेह की रस्सी में बांधा है

→ एक पिता को याद करने वाली हम सब आत्माएं एक की हैं

→ आत्मा रूप में हम सब चमकते सितारे हैं

➳ _ ➳ मधुबन के इस घर में हम आत्माएं एकमत है

→ एकमत स्थिति एकरस अवस्था का आधार है

➢➢ मैं आत्मा डायमंड हॉल में बैठी हूं

➳ _ ➳ चारों और चमकते आत्मा रूपी सितारों को देख रही हूं

→ सर्वशक्तिवान शिव पिता की पधारमणी होती है

■ सब इस देह भान को भूल

■ संपूर्ण अशरीरी अवस्था का अनुभव कर रहे हैं

■ स्टेज पर एक दिव्य शक्तिशाली चमकता सितारा दिख रहा है

■ उस सितारे से किरणें निकल एक एक आत्मा पर जा रही हूं

■ मैं आत्मा स्वयं को भरपूर अनुभव कर रही हूं

■ हम सब पवित्र सितारे उड़ चले उस परम शक्ति के साथ

➳ _ ➳ बाबा के साथ सब आत्माएं परमधाम में है

→ बाबा की अति समीप है

→ संपूर्ण मुक्त अवस्था है

■ चारों और प्रकाश ही प्रकाश है

- इस दिव्य प्रकाश मे हम चैतन्य सितारे चमक रहे है
- परमधाम की इस अद्भुत शांति में
- सब संकल्प समाप्त होते जा रहे है
- और निरसंकलप स्थिति की अनुभूति हो रही है।